# हिन्दुस्तान टाइम्स के नेतृत्व पहल सम्मेलन में प्रधानमंत्री का भाषण

**5 नवम्बर, 2004**
**नई दिल्ली**

'भारत और विश्वः भागीदारी और प्रगति के लिए रास्ता'
शोभना भरतीया जी,
(राष्ट्रपति कुमारतुंगे, श्री मेजर, डा0 किसिंजर)
देवियो और सज्जनो,

आज यहां सुबह "भारत और विश्वः भागीदारी और प्रगति के लिए रास्ता' विषय पर आयोजित हिन्दुस्तान टाइम्स के नेतृत्व पहल सम्मेलन का उद्‌घाटन करते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है। मैं शोभना भारतीया जी का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे सुप्रसिद्ध विद्वानों, राजनेताओं और नीति विश्लेषकों जैसे प्रतिष्ठित श्रोताओं के समक्ष इस विषय पर अपने विचार रखने का अवसर प्रदान किया। मैं इस पहल के लिए उनकी तथा हिन्दुस्तान टाइम्स की सराहना करता हूँ। आपका सम्मेलन हमारी राष्ट्रीय राजधानी के बौद्धिक क्रियाकलाप का एक महत्वपूर्ण वार्षिक समारोह बन चुका है। यहां प्रतिभागियों और श्रोताओं दोनों के बीच इतने सारे मित्रों को देखकर भी प्रसन्नता हो रही है। मेरी इच्छा थी कि यदि मेरे पास समय होता तो मैं विचार-विमर्श की शुरूआत से ही इसमें भाग लेता और यहां एकत्रित बौद्धिक विचारकों की सम्पदा से काफी-कुछ सीख पाता।

"भारत और विश्व" के विषय पर हमारे देश में पिछली आधी सदी से चर्चा होती रही है। आजादी के समय से ही जब हमने विश्व से अपने संबंधों को पुनः-निर्धारित करने की कोशिश की तब से यह चर्चा का एक महत्वपूर्ण विषय रहा है। इस चर्चा की बौद्धिक आधारशिला महात्मा गांधी ने रखी थी। उन्होंने कहा था कि "मेरे घर में दुनिया के कोने-कोने से हवा बहकर आए लेकिन मैं ऐसी किसी हवा से अपने पांवों को उखड़ने नहीं देना चाहता हूँ।"

इसी दृष्टिकोण को आगे बढ़ाते हुए पंडित जवाहर लाल नेहरू ने बाहरी दुनिया के साथ संवाद को दिशा देने के लिए राष्ट्रीय प्रभुसत्ता के महत्व पर बल दिया था। उन्होंने **भारत की खोज** में लिखा है, "आज भारत अपने पुराने रीति-रिवाजों के अंधानुकरण और विदेशी तौर-तरीकों की दासतापूर्ण नकल के बीच हिचकोले खा रहा है। इनमें से किसी से भी इसे राहत या जीवन या प्रगति नहीं मिल सकती है। भारत अपने आपको फिर से स्थापित करेगा जब आजादी नए-नए क्षितिज खोलेगी, और तब यह अपने निराशाजनक तथा अपमानजनक विगत की अपेक्षा अपने भविष्य के प्रति ज्यादा आकर्षित होगा।" पंडित जी ने आशा प्रकट की थी कि "भारत आजादी प्राप्त करने के साथ-साथ अपने में निहित

आत्म-विश्वास और दूसरों से सीखने और सहयोग करने की उत्कट इच्छा के बल पर आगे बढ़ेगा। यह स्पष्ट है कि भारत को अपने आवरण से बाहर आकर आधुनिक युग के जीवन तथा इसकी गतिविधियों में पूरी तरह हिस्सा लेना होगा।"

आधुनिक युग के जीवन तथा उसकी गतिविधियों में पूरी तरह हिस्सा लेना और 'प्रगति के लिए भागीदारी' स्थापित करना आज की मुख्य चुनौतियाँ हैं, जिनसे हम बाहरी दुनिया के साथ सहयोग और संपर्क करके निपटने की कोशिश कर रहे हैं। औपनिवेशिक साम्राज्य के पतन के बाद भारत की तरह विश्व में शायद ही किसी देश ने विश्व के साथ सहयोग पर इतनी गहनता और इतने खुले ढंग से चर्चा की हो। उपनिवेश काल की समाप्ति के आरंभिक वर्षों में, बाद में शीत-युद्ध की गहमा-गहमी और हाल में शीत-युद्धोपरान्त उथल-पुथल के दौरान हमने विश्व के साथ अपने संबंधों के स्वरूप, भागीदारी और प्रगति की सम्भावना पर विस्तार से चर्चा की है। मोटे तौर पर इस मुद्दे पर चर्चा दो दृष्टिकोणों को ध्यान में रखकर हुई हैः पहला तो राजनीतिक और नीतिगत मुद्दा है और दूसरा आर्थिक तथा वाणिज्यिक। यहाँ तक कि आपके सम्मेलन की अवधारणा भी इसी रूप-रेखा के तहत है। जब आपने सम्मेलन के विषय का शीर्षक "भारत और विश्वः भागीदारी और प्रगति के लिए रास्ता" रखा है तब मैं मानता हूँ कि आपका लक्ष्य अवश्य ही राजनीतिक और आर्थिक भागीदारी प्राप्त करना है। आप यह भी देखना चाहते होंगे कि इससे किस प्रकार आर्थिक विकास की प्रक्रिया में तेजी लाई जा सकती है।

निःसंदेह, हम इन मुद्दों को अत्यंत महत्वपूर्ण मानते हैं। वर्षों से विकसित हुई हमारी विदेश नीति और आर्थिक नीति से हम अपने रास्ते में आनेवाली चुनौतियों का सामना करते हुए विश्व के साथ अपने सपंर्क एवं संवाद से लाभ उठाने में सक्षम हुए हैं। लोकतंत्र में प्राथमिकताओं और अवधारणाओं के लिहाज से पार्टियों में राजनीतिक मतभेद होना स्वाभाविक है, फिर भी, हमारी विदेशी और बाहरी आर्थिक नीतियों के कई पहलुओं पर आम सहमति झलकती है। मैं आपका ध्यान इस तथ्य की ओर दिलाना चाहूँगा कि शीत-युद्धोपरान्त नए विश्व के प्रति 1990 के दशक के आरम्भिक वर्षों में हमारी सरकार की जो प्रतिक्रिया थी, उत्तरोत्तर सरकारों ने भी इसे उसी दिशा में आगे बढ़ाया। चाहे बड़ी शक्तियों और अन्य राष्ट्रों के संबंध में हमारी विदेश नीति हो या हमारी विदेश आर्थिक नीति, बदलाव के बावजूद निरन्तरता बनी हुई है। मुझे पूरा विश्वास है कि आपका सम्मेलन इन मुद्दों पर गहराई से विचार- विमर्श करने के लिए समय देगा। मेरे लिए इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि विदेश नीति और विदेश आर्थिक नीति पर हमारी घरेलू चर्चा के उठा-पटक में हमें विश्व के साथ अपने राजनीतिक और आर्थिक संबंध पर उभरती हुई इस आम-सहमति की अनदेखी नहीं करनी चाहिए।

मुझे पूरा विश्वास है कि अन्तिम विश्लेषण में विश्व में भारत का स्थान हमारी घरेलू क्षमताओं, हमारी जनता की भलाई और सृजनशीलता और हमारे राजनीतिक तथा सामाजिक संस्थानों के लचीलेपन से निर्धारित होगा। हमारी सरकार आर्थिक विकास की दर को बढ़ाने को सर्वोच्च प्राथमिकता देगी जिसके लिए एक ऐसी सामाजिक-आर्थिक विकास प्रक्रिया पर बल दिया जाएगा जो समानतापूर्ण और न्यायोचित हो। एक खुले समाज और खुली अर्थ-व्यवस्था के रूप में हमें विश्व के साथ सभी स्तरों पर और सभी क्षेत्रों में सहयोग एवं संवाद बनाए रखना होगा। इस विचार के साथ हम विश्व संस्थाओं में बड़ी भूमिका निभाने के साथ-साथ बहुस्तरीय संस्थानों को मजबूत बनाना और उनका आधार विस्तृत करना चाहेंगे। भारत को एक सक्रिय व्यापारी देश बनना होगा और इसलिए हम नियमों पर आधारित, पारदर्शी और आम सहमति वाली बहुस्तरीय व्यापार व्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए बचनबद्ध हैं।

विश्व के साथ भारत के आर्थिक संबंध इसके आकार और क्षेत्र के अनुरूप होने चाहिए। मैं भारत और इसके एशियाई पड़ोसी देशों के बीच निकटतर और बृहतर आर्थिक संबंध देखना चाहता हूँ। मैं चाहूँगा कि हमारा व्यापारी वर्ग अग्रणी एशियाई आर्थिक समुदाय बनाने की सम्भावना का पता लगाए। हम अपने सभी एशियाई पड़ोसी देशों के साथ परस्पर लाभदायक संबंध बनाना चाहते हैं और 21वीं सदी को एशिया की सदी बनाने के हमारे सम्मिलित सपने को साकार करने हेतु एशिया के साथ मिलकर काम करना चाहते हैं। हम चीन, जापान, आसियान के सदस्य देशों और मध्य एशियाई गणतंत्रों तथा एशिया तथा अफ्रीका के अपने परम्परागत मित्रों के साथ अपने आर्थिक संबंधों को अधिक व्यापक और घनिष्ठ बनाना चाहेंगे। हम शान्तिप्रिय और खुशहाल पड़ोसी चाहते हैं जिससे लोगों, वस्तुएं और सेवाओं का सीमा के आर-पार आसानी से आना-जाना हो सके। दक्षिण एशिया को विश्व अर्थ-व्यवस्था में रचनात्मक और उद्यमी उपमहाद्वीप के रूप में अपना महत्व और स्थान पुनः प्राप्त करना होगा। हम दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन और बंगाल की खाड़ी बहुपक्षीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग पहल (BIMSTEC) जैसे क्षेत्रीय संगठनों में नई ऊर्जा का संचार करना चाहेंगे। हमारा साझा हित इसी में है कि हम गरीबी और अज्ञानता के खिलाफ एकजुट होकर संघर्ष करें।

हम अमेरिका, यूरोपीय संघ और रूस के साथ अपने विस्तृत तथा बहु-पक्षीय संबंधों को मजबूत बनाते रहेंगे। एक जिम्मेदार परमाणु शक्ति सम्पन्न देश के रूप में हम परमाणु अप्रसार के प्रति पूर्णतया वचनबद्ध है और जन संहार के हथियारों के प्रसार को रोकने और आतंकवाद के खतरे का सामना करने के लिए विश्व समुदाय के साथ सहयोग करेंगे। भारत विश्व को रहने के लिए एक ज्यादा सुरक्षित जगह बनाने हेतु अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ सहयोग करने के लिए वचनबद्ध है। हम तेल आपूर्ति, पाइपलाइनों और संचार की सामुद्रिक लाइनों की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु अन्य देशों के साथ एक सहयोगपूर्ण व्यवस्था के अन्तर्गत ऊर्जा सुरक्षा के लिए कार्य करेंगे। हम इसी तरह अन्य विश्वव्यापी खतरों का सामना करने में अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ कार्य करने के लिए भी प्रतिबद्ध हैं। पर्यावरण के लिए खतरा, संक्रामक रोगों का खतरा और एचआईवी/एड्स ये सभी

वैश्विक चुनौतियाँ हैं। चूंकि "दुनिया एक विश्व ग्राम है," इसलिए हम सभी को इन चुनौतियों से निपटने के लिए एक सहयोगपूर्ण विश्व समुदाय के रूप में काम करना होगा।

विश्व के साथ हमारे सहयोग और संवाद का एक महत्वपूर्ण पहलू अनिवासी भारतीयों द्वारा निभाई जा रही भूमिका का है। विश्व में रह रहे भारतीय मूल के लोगों और मातृभूमि के बीच एक मजबूत भावनात्मक संबंध है। मुझे पूरा विश्वास है कि यदि हम देश में उचित माहौल बनाएं और जरूरी बुनियादी ढांचा स्थापित करें तो हम अधिक जीवन्त और गतिशील अर्थ-व्यवस्था बनाने में प्रवासी भारतीयों की रचनात्मकता और उद्यम को आकर्षित कर सकते हैं।

देवियो एवं सज्जनो,

मैं इस अवसर पर विश्व के साथ हमारे सहयोग एवं संवाद के एक बिलकुल अलग पहलू की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा। इसका संबंध राष्ट्रों और सभ्यताओं के बीच संवाद से है। हमारी तरह का एक प्राचीन तथा सभ्य राष्ट्र जो विश्व के एक से ज्यादा महान धर्मों और अनेक दार्शनिक परम्पराओं, भाषाई एवं सांस्कृतिक विविधता की भूमि है, और जो एशिया के सांस्कृतिक चौराहे पर स्थित है, का स्थान स्वाभाविक रूप से विश्व में अद्वितीय है। विश्व हमसे विश्व-वार्ता की मेज पर नीतिगत भागीदारी और बाजार अवसरों से अधिक की अपेक्षा करता है क्योंकि ये दोनों ही महत्वपूर्ण हैं और हम इन दोनों ही मोर्चों पर विश्व के साथ मिलकर कार्य करने के लिए तैयार हैं

मैं आपसे यह निवेदन करना चाहूँगा कि भारत हमारे जमाने की दो बड़ी चुनौतियों नामतः वैश्वीकरण और "सभ्यताओं के बीच टकराव" के बारे में विश्व में चल रही वार्ता में काफी योगदान दे सकता है। इन दोनों विषयों पर इस प्रकार चर्चा होती रही है मानों ये दो विरोधी विश्व विचार-धाराओं के बीच संघर्ष हो। मीडिया विचार विमर्श के विषय को दो परस्पर विरोधी बिन्दुओं में परिभाषित कर प्रत्येक बातचीत को वाद-विवाद का रूप देता रहा है। आप 'पक्ष' में हैं या विपक्ष में हैं? आप हमारे 'साथ हैं या उनके साथ हैं'। वास्तविकता को कभी कागज पर नहीं उतारा जा सकता। इसे हमेशा रंगों के विन्यास के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।

विश्व में भारत का अद्वितीय योगदान रहा है। यह सत्य के विभिन्न पहलुओं और उसकी लगातार खोज के दृष्टिकोण पर आधारित है। विविधता में एकता का विचार तथा अपने पूर्वजों के ज्ञान का उपयोग करते हुए जिन्होंने 'बसुधैव कुटुम्बकम' का विचार व्यक्त किया, जिसका अर्थ होता है 'सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है', -- जो हमारे समय की इन दो चुनौतियों का सामना करने के लिए एक मजबूत, किन्तु व्यावहारिक राजनीतिक आधार है।

यह वही दार्शनिक परम्परा है जिसने हमारी स्वतंत्रता की लड़ाई को प्रेरित किया और हम सत्ता को शान्तिपूर्वक हासिल कर पाए। यह वही सहयोगपूर्ण बहुलवाद का विचार है जो हमारे लोकतंत्र का आधार था। हमारा लोकतंत्र, हमारी सभ्यता के समान ही विविधता में एकता और सभी को साथ लेकर चलने वाले बहुलवाद जैसी वैचारिक धारणाओं पर पोषित हुआ है।

"सभ्यताओं के टकराव " का विचार हमारी सभ्यता की मूल भावना के विरुद्ध है। जैसे अनेक सहायक नदियाँ एक बड़ी नदी में आकर मिलती हैं और साथ-साथ बहती हैं उसी प्रकार भिन्न-भिन्न धर्म और संस्कृतियां मिलकर एक विशाल नदी बनाती है जिसे भारत के नाम से जाना जाता है। नदी क्या है, यह इसकी सहायक नदियों का एक संगम है। हमारी सम्यता को पहचान और मान्यता प्रदान करने में दो नदियों--गंगा और सिन्धु की मुख्य भूमिका रही है। अनेक सहायक नदियों के मिलने से ये नदियाँ चौड़ी और गहरी हो गई हैं। जब हम मैदानी इलाके में विशाल गंगा की पूजा करते हैं तब हम उन अनेक नदियों और सहायक नदियों के प्रति भी सम्मान प्रकट करते हैं जो सदियों से और अलग-अलग जगह से इसमें आकर मिलती आ रही हैं। भारत की भी यही कहानी है। यह विविधताओं से भरी भूमि है जहाँ अलग-अलग समय पर और भिन्न-भिन्न स्थानों से लोग आए और जहाँ आधुनिक लोकतंत्र बहुलवाद और सबको साथ लेकर चलने की विचारधारा पर विकसित हुआ है।

यह सच है कि हममें से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो भारत की इस समन्वयवादी विचारधारा से सहमत नहीं है। वे न केवल "सभ्यताओं के टकराव " में विश्वास करते हैं बल्कि इसे प्रोत्साहित भी करना चाहते हैं। वे वास्तव में हमारे प्राचीन देश की सच्ची भावना का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं जैसा कि सुनील खिलनानी और प्रताप भानु मेहता ने अपनी पुस्तकों में स्पष्ट तौर पर कहा है कि समन्वयवादी बहुलवाद का विचार ही, जिसने सबको शामिल करने वाली लोकतंत्र की संस्थाओं को स्वरूप प्रदान किया है, विश्व को भारत की सबसे बड़ी देन है। मैं लोकतंत्र के "अनुदारवादी " पहलुओं के बारे में फरीद जकारिया द्वारा व्यक्त संदेहों से भी अवगत हूँ। लेकिन कई खामियों और सीमाओं तथा चुनौतियों के बावजूद हम सभी स्तरों पर प्रत्येक चुनाव के बाद सहज रूप से सत्ता का हस्तांतरण करने और प्रतिनिधिक लोकतंत्र को स्थिर बनाए रखने में सफल रहे हैं। विशेषकर एक ऐसे देश में जिसका महाद्वीपीय आकार है और जहाँ मतदाताओं की संख्या 50 करोड़ से ज्यादा है।

इसी आधार पर हम विश्व के साथ एक अर्थपूर्ण भागीदारी विकसित कर सकते हैं। हम सदियों से विश्व के पास ज्ञान और अवसर के खोजकर्ता के रूप में पहुँचते रहे हैं। भारतीय लोग हमेशा विश्व में शिक्षकों और व्यापारियों, लेखकों और कामगारों के रूप में गए हैं न कि विजेताओं के रूप में।

विश्व में उतरोत्तर इस अवधारणा को स्वीकार किया जाता रहा है कि खुले समाज और खुले बाजार सामाजिक और आर्थिक संगठन के सर्वाधिक स्वाभाविक और सुस्थिर रूप हैं। यह भी अब निरंतर स्पष्ट होता जा रहा है कि बहुलवादी और बहु-संस्कृतिवादी सिद्धांतों पर आधारित सामंजस्यवादी लोकतंत्र खुले बाजारों और खुले समाजों द्वारा प्रस्तुत चुनौतियों से निपटने का सर्वाधिक टिकाऊ साधन है।

हाल के वर्षों में विश्व समुदाय जातीय नरसंहार से लेकर जेहादवाद तक विभिन्न रूपों में वैश्वीकरण और राजनीतिक कट्टरवाद के खतरे से निपटने में सक्रिय रूप से संलग्न रहा है। ऐसी चुनौतियों का कोई सैनिक समाधान नहीं है और न ही कोई एकतरफा समाधान। इन समस्याओं का कोई भी सार्थक समाधान लोकतांत्रिक बहुलवाद के सिद्धांतों और कानून तथा विचारों और आस्थाओं की विविधता के प्रति सम्मान पर ही आधारित होना चाहिए। सभी समाजों में संयम की आवाज को मजबूत करना होगा ताकि यह दुनिया लोगों के रहने के लिए एक बेहतर स्थान बन सके। जैसा कि गांधीजी ने हमें हमेशा याद दिलाया कि आँख के बदले आँख का सिद्धांत हमें अन्धा बना देगा।

मित्रो,

अर्थशास्त्री विश्व के साथ हमारे संबंधों का निर्धारण विश्व व्यापार में हमारी भागीदारी और पूंजी प्रवाह के रूप में करते हैं जबकि नीति विश्लेषक सैनिक और राजनीतिक संबंधों के आधार पर आकलन करते हैं। मैं आपके विचारार्थ यह विचार प्रस्तुत करता हूँ कि लोगों का विश्व के साथ चिरस्थायी संबंध विचारों के क्षेत्र में होता है और हमें भारत के विचारों 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आधार पर विश्व के साथ संबंध बनाना चाहिए। राष्ट्र आपस में टकरा सकते हैं लेकिन फिर भी संस्कृतियां और सभ्यताएं एक साथ मिलकर रह सकती है। **21वीं सदीं की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता** सभ्यताओं का टकराव नहीं, बल्कि " सभ्यताओं का संगम " होगी।

मुझे विश्वास है कि विश्व समुदाय राष्ट्रों के बीच संवाद और " सभ्यताओं के संगम" के जरिए वैश्वीकरण की चुनौतियों और आतंकवाद के खतरे से ज्यादा असरदार ढंग से निपट सकता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए भारत को विश्व की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए। अलगाववाद की राजनीति को नकार कर और हमारे द्वारा संजोए गए धर्मनिरपेक्षता और बहुलवाद जैसे मूल्यों के पक्ष में मतदान कर भारत के लोगों ने हमें फिर से एक बार राष्ट्रों के बीच अपना सिर गर्व से ऊँचा करने का अवसर प्रदान किया है।

हममें से जिन लोगों ने शीत युद्ध की समाप्ति का जश्न मनाया था और इससे विकास का लाभ उठाने की उम्मीद की थी, आज विश्व में शान्ति और सम्पन्नता के लिए खतरा उत्पन्न कर रहे नए वैचारिक विभाजन से निराश हैं। "सभ्यताओं का टकराव" और आतंकवाद की विचारधारा विश्व शान्ति के लिए खतरा है। हमें संयम और सभ्य संवाद की आवाज को ऊंचा उठाना होगा ताकि सभ्यताओं का एक संगम कायम हो जिससे दुनिया लोगों रहने के लिए बेहतर और सुरक्षित स्थान बन सके।

जैसा कि अनेक विकसित औद्योगिक अर्थव्यवस्थाओं ने तथाकथित **"संक्रमण से गुजर रही अर्थव्यवस्थाओं "** को खुले केन्द्रीय योजनाबद्ध अर्थव्यवस्थाओं से खुले बाजार वाली अर्थव्यवस्थाओं के संक्रमण में सहायता दी है उसी प्रकार हमारे जैसे लोकतंत्र का अनुभव **"संक्रमण से गुजर रहे समाजों "** को खुले, सामंजस्यवादी, बहुलवादी और लोकतांत्रिक समाजों के रूप में विकसित होने में कुछ सहायता कर सकता है।

जब संयुक्त राष्ट्र संघ और अन्य लोकतांत्रिक देशों की सरकारें अपने देशों में चुनाव करवाने में सहायता लेने के लिए हमारे निर्वाचन आयोग के पास पहुँचती हैं तो हम अपनी लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं और संस्थाओं पर गर्व महसूस करते हैं। हमारे निर्वाचन आयोग का दुनिया भर में कहीं कोई सानी नहीं है। इसने कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक चुनाव करवाने में अपनी दक्षता और पारदर्शिता का शानदार रिकार्ड कायम किया है।

मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि दुनिया में लोकतंत्र की मजबूती के लिए हमारे योगदान के बारे में अपने विचार रखते हुए मैं राजनयिक सक्रियता की वकालत नहीं कर रहा हूँ और न ही हम कभी भारत में किसी भी तरह के राजनैतिक हस्तक्षेप की वकालत करेंगे। इसका सवाल ही पैदा नहीं होता। हम प्रत्येक देश के संप्रभु अधिकार को मान्यता प्रदान करते हैं कि वह अपनी जनता की भावनाओं के अनुरूप जिस तरह चाहे अपने कार्य-व्यवहार को संचालित करे। लेकिन मेरा यह मानना है कि लोकतंत्र की संस्थाओं और बहुलवाद के विचार को सुदृढ़ करने की विश्व समुदाय की लालसा में हमारा अनुभव कुछ मददगार साबित हो सकता है।

जो भागीदारी हम करना चाहते हैं और उन्नति का जो आधार हम बनाना चाहते हैं वे खुले समाज और खुली अर्थव्यवस्था के ढांचे के भीतर समग्र बहुलवाद और बहु-संस्कृतिवाद के मूल्यों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता की बुनियाद पर होने चाहिए। यही वादा हमारी सरकार ने अपने यहाँ किया है। यही अनुभव हमें खुशी-खुशी दुनिया के साथ बांटना चाहिए। हमारी राष्ट्रीयता और हमारा गणतंत्र, लोकतंत्र के प्रति हमारी प्रतिबद्धता से आंतरिक रूप से जुड़े हुए हैं और हमारा लोकतंत्र यदि जीवित है तो इसलिए क्योंकि हमने अपने यहाँ सभ्यताओं के बीच संवाद को संभव बनाया है।

दुनिया को यह हमारा संदेश है और जब भी हमें लोकतांत्रिक बहुलवाद की संस्थाओं को मजबूत करने के लिए कहा जाए तो हमें ऐसे अवसरों से बचना नहीं चाहिए। हम अपने अनुभव से जानते हैं कि यदि हम लोकतांत्रिक बहुलवाद के ढांचे के भीतर 'सभ्यताओं का संगम' करा पाए तो विश्व एक सुरक्षित स्थान होगा और उन्नति करेगा तथा खुशहाली सुनिश्चित होगी। उस आधार पर हम प्रगति के लिए जो भागीदारी कर सके तो वे सही अर्थों में शाश्वत होंगी। मैं सोचता हूँ, जैसा कि पंडितजी काफी पहले मानते थे, कि अब समय आ गया है कि "भारत आगे आए और आधुनिक युग के जीवन और कार्यकलापों में पूरी तरह से हिस्सा ले'।

मित्रो,

मैं यहां एकत्र हुए अनेक विद्वानों का आभारी रहूँगा यदि आप इनमें से कुछ विचारों पर अपना मत रखें और मेरा मार्गदर्शन करें कि क्या इन शर्तों पर विश्व के साथ हमारी प्रतिबद्धता के बारे में मेरा दृष्टिकोण सही है या नहीं? मैं सम्मेलन की सफलता की कामना करता हूँ और इसमें होने वाले विचार-विमर्शों को जानने की उत्सुकता से प्रतीक्षा करुँगा।

धन्यवाद।

*****